# वैश्विक लैंगिक अंतराल सूचकांक, 2022

## प्रीलिम्स के लिये:

विश्व आर्थिक मंच, वैश्विक लैंगिक अंतराल सूचकांक, 2022।

## मेन्स के लिये:

वैश्विक लैंगिक अंतराल सूचकांक, 2022, लिंग, महिलाओं से संबंधित मुद्दे।

## चर्चा में क्यों?

हाल ही में **विश्व आर्थिक मंच (WEF)** ने वर्ष 2022 के लिये **अपने वैश्विक लैंगिक अंतराल** (**Global Gender Gap-GGG) सूचकांक** में **भारत को 146 देशों में से 135वें स्थान पर रखा है।**

- **भारत का समग्र स्कोर 0.625 (वर्ष 2021 में) से बढ़कर 0.629 हो गया है, जो पिछले 16 वर्षों में सातवाँ उच्चतम स्कोर है।**
    - वर्ष 2021 में भारत 156 देशों में 140वें स्थान पर था।
- **लैंगिक अंतराल** महिलाओं और पुरुषों के बीच का अंतर है जो सामाजिक, राजनीतिक, बौद्धिक, सांस्कृतिक या आर्थिक उपलब्धियों या दृष्टिकोण में परिलक्षित होता है।

**INDIA'S REPORT CARD**

| Index/sub-index | 2022 (146 countries) | | 2021 (156 countries) | |
|---|---|---|---|---|
| | Rank | Score | Rank | Score |
| Global Gender Gap Index | 135 | 0.629 | 140 | 0.625 |
| Political empowerment | 48 | 0.267 | 51 | 0.276 |
| Economic participation & opportunity | 143 | 0.350 | 151 | 0.326 |
| Educational attainment | 107 | 0.961 | 114 | 0.962 |
| Health and survival | 146 | 0.937 | 155 | 0.937 |

Source: World Economic Forum

//

## वैश्विक लैंगिक अंतराल सूचकांक:

- **परिचय:**
    - यह उप-मैट्रिक्स के साथ चार प्रमुख आयामों में **लैंगिक समानता की दिशा में उनकी प्रगति पर देशों का मूल्यांकन करता है।**
        - आर्थिक भागीदारी और अवसर
        - शिक्षा का अवसर।
        - स्वास्थ्य एवं उत्तरजीविता।
        - राजनीतिक सशक्तीकरण।

- चार उप-सूचकांकों में से प्रत्येक पर और साथ ही समग्र सूचकांक पर GGGसूचकांक 0 और 1 के बीच स्कोर प्रदान करता है **जहाँ 1 पूर्ण लैंगिक समानता दिखाता है और 0 पूर्ण असमानता की स्थिति को दर्शाता है।**
- यह सबसे लंबे समय तक चलने वाला सूचकांक है, जो वर्ष 2006 में स्थापना के बाद से समय के साथ **लैंगिक** अंतरालों को समाप्त करने की दिशा में प्रगति को ट्रैक करता है।

- **उद्देश्य:**
    - स्वास्थ्य, शिक्षा, अर्थव्यवस्था और राजनीति पर महिलाओं व पुरुषों के बीच सापेक्ष अंतराल पर प्रगति को ट्रैक करने के लिये दिशासूचक के रूप में कार्य करना।
    - इस वार्षिक मानदंड के माध्यम से प्रत्येक देश के हितधारक प्रत्येक विशिष्ट आर्थिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक संदर्भ में प्रासंगिक प्राथमिकताएँ निर्धारित करने में सक्षम होते हैं।

## भारत की चार प्रमुख आयामों पर स्थिति:

- **राजनीतिक आधकिारिता (संसद में और मंत्री पदों पर महिलाओं का प्रतिशत):**
    - भारत का सर्वोच्च स्थान (146 में से 48वाँ) है।
    - अपनी रैंक के बावजूद **इसका स्कोर 0.267 पर काफी कम है।**
        - इस श्रेणी में कुछ सर्वश्रेष्ठ रैंकिंग वाले देश बहुत बेहतर स्कोर करते हैं।
        - उदाहरण के लिये **आइसलैंड 0.874 के स्कोर के साथ प्रथम स्थान पर है और बांग्लादेश 0.546 के स्कोर के साथ 9वें स्थान पर है।**
- **आर्थिक भागीदारी और अवसर (श्रम बल में महिलाओं का प्रतिशत, समान कार्य के लिये वेतन समानता, अर्जित आय):**
    - रिपोर्ट में भारत 146 देशों में से 143वें स्थान पर है, भले ही इसका स्कोर वर्ष 2021 में 0.326 से 0.350 तक सुधरा है।
        - वर्ष 2021 में भारत 156 देशों में से 151वें स्थान पर था।
    - भारत का स्कोर वैश्विक औसत से काफी कम है और इस मापन विधि पर भारत से केवल ईरान, पाकिस्तान और अफगानिस्तान ही पीछे हैं।
- **शिक्षा प्राप्ति (प्राथमिक, माध्यमिक और तृतीयक शिक्षा में साक्षरता दर व नामांकन दर):**
    - भारत 146 में से 107वें स्थान पर है और पिछले वर्ष से इसका स्कोर थोड़ा खराब रहा है।
        - वर्ष 2021 में भारत 156 में से 114वें स्थान पर था।
- **स्वास्थ्य और उत्तरजीविता (जन्म के समय लिंगानुपात तथा स्वस्थ जीवन प्रत्याशा):**
- भारत सभी देशों में अंतिम (146वें) स्थान पर है।
- इसका स्कोर वर्ष 2021 से नहीं बदला है जब यह 156 देशों में से 155वें स्थान पर था।

## सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन में लैंगिक अंतर को कम करने के लिये भारतीय पहलें

## आर्थिक भागीदारी और स्वास्थ्य तथा उत्तरजीविता:

- **बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ:** यह बालिकाओं की सुरक्षा, अस्तित्व और शिक्षा सुनिश्चित करता है।
- **महिला शक्ति केंद्र:** इसका उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं को कौशल विकास और रोजगार के अवसरों के साथ सशक्त बनाना है।
- **महिला पुलिस स्वयंसेवक:** इसमें राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों में महिला पुलिस स्वयंसेवकों को शामिल करने की परिकल्पना की गई है जो पुलिस एवं समुदाय के बीच एक कड़ी के रूप में कार्य करते हैं तथा संकट में महिलाओं को सुरक्षा प्रदान करते हैं।
- **राष्ट्रीय महिला कोष:** यह एक शीर्ष सूक्ष्म वित्त संगठन है जो गरीब महिलाओं को विभिन्न आजीविका और आय सृजन गतिविधियों के लिये रियायती शर्तों पर सूक्ष्म ऋण प्रदान करता है।
- **सुकन्या समृद्धि योजना:** इस योजना के तहत बैंक खाते खोलकर लड़कियों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाया गया है।
- **महिला उद्यमिता:** महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिये सरकार ने स्टैंडअप इंडिया और महिला ई-हाट (महिला उद्यमियों / SHGs / गैर सरकारी संगठनों का समर्थन करने के लिये ऑनलाइन विपणन मंच), उद्यमिता व कौशल विकास कार्यक्रम (ईएसडीपी) जैसे कार्यक्रम शुरू किये हैं।
- **कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय:** इन्हें शैक्षिक रूप से पिछड़े ब्लॉक (ईबीबी) में खोला गया है।
- **राजनीतिक आरक्षण:** सरकार ने पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं के लिये 33 प्रतिशत सीटें आरक्षित की हैं।

## वैश्विक निष्कर्ष:

- **रैंकिंग:**
    - 146 देशों में आइसलैंड ने दुनिया के सबसे अधिक लैंगिक समानता (Gender-Equal) वाले देश के रूप में अपना स्थान बरकरार रखा है।
    - फिनलैंड, नॉर्वे, न्यूज़ीलैंड और स्वीडन क्रमशः सूची में शीर्ष पाँच देश हैं।
    - रिपोर्ट में **अफगानिस्तान** सबसे खराब प्रदर्शन करने वाला देश है।
- **परिदृश्य:**
    - कुल मिलाकर **GGG 68.1% की गिरावट के साथ बंद** हुआ है। प्रगति की **वर्तमान दर पर इसे पूर्ण समता तक पहुँचने में 132 वर्ष** लगेंगे।
    - यद्यपि किसी भी देश ने पूर्ण लैंगिक समानता हासिल नहीं की लेकिन शीर्ष 3 अर्थव्यवस्थाओं ऐसी हैं जिन्होंने लैंगिक अंतराल को 80% तक

कम किया है:
        - आइसलैंड (90.8%)
        - फिनलैंड (86%),
        - नॉर्वे (84.5%)
    - दक्षिण एशिया को लैंगिक समानता तक पहुँचने में सबसे अधिक समय (अनुमानतः 197 वर्ष) लगेगा।
- **कोविड-19 का प्रभाव:**
    - कोविड-19 महामारी के कारण लैंगिक समानता की दिशा में होने वा प्रगति अवरुद्ध हुई है यहाँ तक कि कुछ मामलों में यह पूर्व स्थिति में भी पहुँची है।
    - महिलाओं पर मंदी का अधिक प्रभाव पड़ा है, जिसे व्यापक रूप से 'शीसेशन' (**shecession**) नाम दिया गया है, क्योंकि महिलाएँ कोविड से सर्वाधिक प्रभावित क्षेत्रों जैसे- रिटेल और आतिथ्य (hospitality) में कार्यरत थीं।
    - महामारी के कारण आई मंदी ने महिलाओं को वर्ष 2009 के वित्तीय संकट की तुलना में अधिक प्रभावित किया है।

## विश्व आर्थिक मंच :

- **परिचय:**
    - विश्व आर्थिक मंच सार्वजनिक-निजी सहयोग हेतु अंतर्राष्ट्रीय संगठन है।
    - यह 1971 में एक गैर-लाभकारी संस्था के रूप में स्थापित किया गया था और इसका मुख्यालय जिनेवा, स्विट्ज़रलैंड में है।
- **प्रमुख रिपोर्ट:**
    - ऊर्जा संक्रमण सूचकांक
    - वैश्विक प्रतिस्पर्द्धात्मकता रिपोर्ट
    - वैश्विक IT रिपोर्ट
        - WEF ने INSEAD और कॉर्नेल यूनिवर्सिटी के साथ मिलकर इस रिपोर्ट को प्रकाशित किया है।
    - वैश्विक लैंगिक अंतराल रिपोर्ट
    - वैश्विक जोखिम रिपोर्ट
    - वैश्विक यात्रा और पर्यटन रिपोर्ट

# ग्लोबल जेंडर गैप इंडेक्स 2022

**जारीकर्त्ता** विश्व आर्थिक मंच

**शीर्ष प्रदर्शनकर्त्ता** आइसलैंड

**सबसे निम्न प्रदर्शनकर्त्ता** अफगानिस्तान

## चार प्रमुख आयाम

- आर्थिक भागीदारी एवं अवसर
- शिक्षा प्राप्ति
- स्वास्थ्य एवं उत्तरजीविता
- राजनीतिक सशक्तीकरण

## प्रमुख निष्कर्ष

- लैंगिक समानता तक पहुँचने में 132 साल लगेंगे।
- कोविड का प्रभाव (Shecession): कोविड के चलते आई मंदी ने महिलाओं को प्रमुखता से प्रभावित किया है, इसका मुख्य कारण यह है कि महिलाओं की उपस्थिति उन क्षेत्रों में अधिक थी जो कोविड के कारण सर्वाधिक प्रभावित हुए जैसे- रिटेल तथा आतिथ्य (होस्पिटैबिलिटी) क्षेत्र।

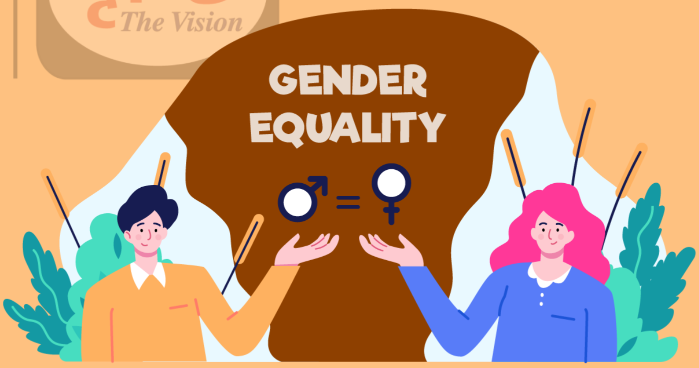


## भारत का स्थान- 135वाँ
## (146 देशों में)

- "स्वास्थ्य एवं उत्तरजीविता" के आयाम में विश्व में सबसे खराब प्रदर्शनकर्त्ता।
- समग्र स्कोर में सुधार (0.625 से 0.629) हुआ है। वर्ष 2021 में भारत 156 देशों में 140वें स्थान पर था।
- अपने पड़ोसी देशों की तुलना में खराब स्थिति - बांग्लादेश (71), नेपाल (96), श्रीलंका (110), मालदीव (117) और भूटान (126)।
- दक्षिण एशिया में केवल ईरान (143), पाकिस्तान (145) और अफगानिस्तान (146) का प्रदर्शन भारत से भी खराब है।

**स्रोत: द हिंदू**

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/global-gender-gap-index-2022